Sanskrit (Hons)
B.A. (1st Part)

Date: 11/8/2020

डॉ० [illegible]
अतिथि विद्वान
विभाग: संस्कृत
आर्य कन्या कॉलेज, मेरठ,
[illegible]

मेघदूतम् (पूर्वमेघ) -

महाकवि कालिदास ने प्रकृति चित्रण में सिद्धहस्त कवि हैं। महाकवि की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे इसके लिए बिल्कुल सामान्य एवं लालित्य उपमाओं से युक्त उदाहरण देते हैं जो पाठकों के अन्तर्मन तक आह्लादित कर देते हैं।

उज्जयिनी के रास्ते में निर्विन्ध्या नदी बहती है। लंगानिवास से शब्द करने वाले हंस, सारस आदि के कलरव नदी की करधनी जैसी है। साथ यह करधनी नदी के ऊबड़ खाबड़ पत्थरों के होकर बहने के कारण कुछ ढीली सी हो गई प्रतीत होती है, फलतः उस नदी के आवर्त रूप नाभि दिखाई पड़ती है। इस प्रकार निर्विन्ध्या नदी संभोगोत्कण्ठिता नारी की तरह मेघ प्रियतम के समक्ष नाभि प्रदर्शन रूप विभ्रम को प्रकाशित करती सी जान पड़ती है, कारण यह है कि अपने प्रियतम के समक्ष स्त्रियों का प्रथम प्रणय निवेदन उनका हावभाव ही होता है -

वीचि क्षोभस्तनित विहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलित सुभगं दर्शितावर्तनाभेः
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥

अर्थात्, मार्ग में लहरों की हलचल के कारण शब्द करते हुए पक्षियों की पंक्ति ही तिरछी करधनी है और जो पत्थरों पर जल के रुकने के कारण (पक्ष में प्रवाहरूपा के भय के कारण) हंस बाकी से बल खाती चलती अपनी मेखला रूपी नाभि-शिखा रही है, ऐसी निर्विन्ध्या नदी के सम्पर्क में आकर तू है धन्य! उसका रस पान करना अर्थात् स्त्री पक्ष में उसके संग रस का आनन्द लेना, क्योंकि स्त्रियों का प्रथम प्रणय वचन प्रियतम के प्रति उनका हावभाव ही होता है।

यह श्लोक महाकवि कालिदास के शृंगार रस से आप्लावित उत्तम उदाहरण के रूप में लिया जाता है। एक निर्जीव नदी को उत्तम लावण्ययुक्ता नायिका के रूप में चित्रण कर नदी में उत्पन्न होने वाले भँवरों को नायिका के नाभि-प्रदर्शन से तुलना करना महाकवि को सामान्य धरातल से ऊँचा उठाकर कल्पनालोक के शिखर पर पहुँचा देता है एवं वहाँ से न तो कवि उतरना चाहता है और न पाठक ही उतरने को तैयार है। महाकवि इसमें एक कर्म-वैज्ञानिक शक्ति भी कहते हैं नहीं युवती-स्त्रियों का प्रथम प्रणय निवेदन उनकी प्रियतम के प्रति भावभंगिमा ही होती है।

Rupmani Ram Pun
11/8/2020

— क्रमशः —